6

गिजूभाई के शैक्षिक नवाचार प्रयोगों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रासंगिकता

एकता इंगले*

गिजूभाई बाल साहित्य के रचयिता, समर्पित प्रयोगवादी शिक्षक व शिक्षाविद थे। गिजूभाई पेशे से भले ही एक वकील रहे हों, मगर उनके पास एक शिक्षक की दृष्टि थी और वह बालदृष्टि भी थी जो नन्हें बच्चों की आँखों में, उनकी जिज्ञासा, उनकी शिक्षा, उनकी रुचि व उनकी उमंग को अपने ढँग से देखने में सक्षम थी। वे भारतीय शिक्षा को समर्पित एक ऐसा नाम हैं जिसने सर्वप्रथम शिक्षा जगत में नवाचार शैक्षिक प्रयोग कर बालकेंद्रित शिक्षा की संकल्पना स्थापित करने हेतु अथक प्रयास किए। उनके शैक्षिक नवाचार प्रयोग का सार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, प्राचीन एवं भारतीय परंपरा, ज्ञान एवं वैज्ञानिक वैचारिक दृष्टिकोण को सभी के लिए मुहैया करने के लिए एक ऐतिहासिक कदम है। गिजूभाई के तात्कालिक शैक्षिक नवाचार प्रयोग, विद्यार्थियों में तर्कसंगत विचार, रचनात्मक, कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्यों का सृजन करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विद्यार्थियों में इन्हीं समग्र मूल्यों को स्थापित करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि गिजूभाई के शैक्षिक नवाचार प्रयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी प्रासंगिक हैं।

भारत के महान शिक्षाविद गिजूभाई बधेका का जन्म 15 नवंबर सन 1885 में सौराष्ट्र के चितल में हुआ था। उन्होंने सन 1907 में अपनी शिक्षा मुंबई में प्राप्त की। सन 1915 में दक्षिणामूर्ति भवन में एक स्वयंसेवी संस्था के कानूनी सलाहकार बने। 1920 में उन्होंने इसी भवन में बालमंदिर की स्थापना की तत्पश्चात वकालत छोड़कर उन्होंने इसी बाल मंदिर में प्राथमिक शिक्षा में अनेक शैक्षिक प्रयोग किए। गिजूभाई मॉण्टेसरी पद्धति के सिद्धांतों व शिक्षा पद्धति का गहनता से अध्ययन कर उसे भारतीय परिवेश में उपयोग करने के लिए प्रयासरत रहे। गिजूभाई का निधन 23 जून, 1939 में हुआ।

गिजूभाई बाल साहित्य के रचयिता, समर्पित प्रयोगवादी शिक्षक व शिक्षाविद थे। वे पेशे से भले ही एक वकील रहे हों, मगर उनके पास एक शिक्षक की दृष्टि थी, एक उन्नतशील समाज की दृष्टि थी, माता व पिता की दृष्टि थी और वह बालदृष्टि भी थी जो बच्चों की आँखों में झाँक-झाँक कर उनकी जिज्ञासा, उनकी शिक्षा, उनकी रुचि व उनकी उमंग को अपने ढँग से देखने में सक्षम थी। उनकी छवि साधारण थी,

**सहायक प्राध्यापिका*, सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश

परंतु उनका कृतित्व प्रभावी था। उनकी मूँछों ने उन्हें, "मूँछोवाली माँ" की पहचान दिलाई या यूँ कहें कि यदि व्यक्तित्व और व्यवहार का पहला प्रयोग उन्होंने कोई किया तो सर्वप्रथम उनका नन्हें बच्चों के लिए उनका 'माँ' हो जाना था। यहाँ 'माँ' शब्द का आशय नन्हें बच्चों का भय से मुक्त होना था। गिजूभाई का प्रयास था कि प्रत्येक शिक्षक व अभिभावक अपने में ऐसी सशक्त शक्ति स्थापित करें जो बालक का सर्वांगीण विकास कर सकें। वे बालक की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को स्वावलंबी, निर्भय व सृजनशील बनाए। बालक की स्वाभाविक वृत्तियों को विकसित करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

जीवन दर्शन

गिजूभाई ईश्वर को सृष्टि के रचियता व संहारकर्ता के रूप में मानते थे। उनका मानना था कि मनुष्य ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति है तथा उनके अनुसार मनुष्य के सर्वांगीण विकास में भौतिक व आध्यात्मिक दोनों ही ज्ञान का होना आवश्यक है। भौतिक ज्ञान बाह्य इंद्रियों तथा आध्यात्मिक ज्ञान अंत: करण से प्राप्त होता है। सत्य, अहिंसा, स्नेह, करुणा, परोपकार जैसे मूल्यों का समावेश व्यक्ति के जीवन में होना आवश्यक है।

शिक्षा दर्शन

गिजूभाई के शैक्षिक विचार शिशु शिक्षा पर केंद्रित हैं। उन्होंने तत्कालीन शिक्षा पद्धति, शिक्षा प्रणाली का विरोध कर विद्यार्थियों को खेल-खेल में, स्नेहपूर्ण स्वतंत्र वातावरण में शिक्षा दी जाए विषय पर ज़ोर दिया। उनका मानना था कि बालक में विद्यालय जाने की ऐसी ललक पैदा करनी चाहिए जिससे वह मुस्कुराते हुए विद्यालय में प्रवेश व मुस्कुराते हुए विद्यालय से वापस जाए। ऐसी शिक्षा व्यवस्था, उसे सीखने के लिए प्रेरित करेगी व सृजन के अवसर प्रदान करेगी।

शिक्षा के उद्देश्य

1. बालक का शारीरिक व मानसिक विकास
2. बालक की सृजनात्मक शक्ति का विकास
3. बालक का धार्मिक व नैतिक विकास
4. आदर्श नागरिक गुणों का विकास

वास्तव में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना है। शिक्षा एक स्वाभाविक, सामाजिक, दार्शनिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है, जो बालक में ज्ञान कौशल एवं अधिगम कौशल में वृद्धि कर स्वयं के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन करती है। किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली उसकी शिक्षा नीति पर आधारित होती है। शिक्षा नीति, शिक्षा प्रणाली के लिए एक संवैधानिक प्रावधान है जो शिक्षा व्यवस्था को एक ठोस आधार प्रदान करती है। शिक्षा प्रणाली में द्रुतगति से सकारात्मक परिवर्तन कर गुणवत्तापूर्ण सर्व सुलभ शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराती है। देश की परंपराओं की धारा को प्रवाहमान बनाती है।

इन्हीं परंपराओं को गिजूभाई ने भी अपने शैक्षिक दर्शन के द्वारा विद्यार्थियों में हस्तांतरित करने के लिए अथक प्रयास किया। शिक्षा बच्चों की संस्कार भूमि है। गिजूभाई ने संस्कार का कोई विशेष सिद्धांत प्रतिपादित नहीं किया, अपितु अपने व्यवहार से संस्कार में नवाचार व प्रयोग को सम्मिलित कर तात्कालिक शिक्षा प्रणाली को नवीन दिशा दी। उन्होंने छोटी-छोटी सी बातों में एक पूरी संस्कृति और उसमें निहित संस्कारों से बच्चों को संस्कारित करने

का भरसक प्रयास किया। गिजूभाई का ज्ञान विशद और व्यापक था। उन्होंने भारतीय दर्शन व पश्चिमी दर्शन का अध्ययन किया था। माता मॉण्टेसरी के भारतीय संस्करण थे गिजूभाई अर्थात भारतीय शिक्षा को समर्पित एक ऐसा नाम जिसने अपने काम से अपनी संकल्पना को सार्थक किया। वे एक मात्र ऐसे शिक्षाविद० थे जिन्हें प्रथम प्रयोगधर्मी पुरुष के रूप में जाना जाता है। उनके द्वारा किए गए प्रयोग एक प्रकार से 'दिवास्वपन' के समान थे जिसका अर्थ है — 'दिन में सपने देखना' अथवा बिना सोये सपने देखना जो कि एक कठिन कार्य है। शिक्षा में दिवास्वप्न से आशय तात्कालिक शिक्षा प्रणाली 'प्रयोग' या 'नवाचार' से है। नवाचार स्थापित मान्यता या जड़ता पर प्रहार कर प्रचलित परंपरा व प्रक्रिया को निष्प्रभावी बनाता है। गिजूभाई ने अपनी कल्पना से, कर्म से, नवाचार और प्रयोग से तात्कालिक शिक्षा व्यवस्था में असंभव विचारों को संभव बनाया। गाँधीजी के कथनों ने गिजूभाई के जीवन को नवीन दिशा प्रदान की और कहा — "राजनीति में तो तुम्हारी जरूरत नहीं है, तुम बच्चों को पढ़ाने का काम करो। "गाँधीजी यदि राष्ट्रपिता थे तो 'बालकों के गाँधी' गिजूभाई थे।

अतः गिजूभाई के शैक्षिक दर्शन का चिंतन करने पर निम्न विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं—

1. बालकों के वैयक्तिक विकास को महत्व
2. अनुशासन के लिए स्वक्रिया व स्वप्रेरणा का स्वतः होना।
3. स्वअधिगम को महत्व
4. सामाजिकता व व्यवहारिकता के विकास पर बल
5. शिक्षक की भूमिका एक मित्र, सहायक व पथप्रदर्शक के रूप में।

गिजूभाई के शैक्षिक दर्शन के इन प्रमुख बिंदुओं का सार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दृष्टिगोचर होता है। सर्वविदित है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्राचीन एवं भारतीय परंपरा, ज्ञान एवं वैज्ञानिक वैचारिक दृष्टिकोण को सभी के लिए मुहैया करने के लिए एक ऐतिहासिक कदम है। शिक्षा नीति 2020 जीवंत ज्ञान की नवीन संकल्पनाओं का निर्माण करती है। रचनात्मक क्षमता के विकास पर ज़ोर देती हैं। साक्षरता के साथ-साथ उच्च स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधित संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास, विद्यार्थियों में हो, इस पर जोर देती है। शिक्षा नीति 2020 के मूलभूत सिद्धांत, शैक्षणिक संस्था, शिक्षा प्रणाली, शैक्षणिक वातावरण/परिवेश, शिक्षक-शिक्षार्थी के साथ-साथ अभिभावकों को भी मार्ग प्रशस्त करती है।

शिक्षा नीति 2020 बालक के समग्र विकास पर बल देती है। सर्वविदित है कि बालक के इन गुणों के विकास में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। शिक्षा की इसी संकल्पना को स्थापित करने में गिजूभाई की भूमिका सर्वोपरि है। उन्होंने बालकों को देवता तुल्य माना और उनकी सेवा को ईश्वर उपासना के रूप में स्वीकार किया। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार शिक्षण पद्धति व नवीन प्रयोग के लिए सर्वोपरि है। उन्होंने सन 1920 से 1936 तक बालमंदिर में समर्पण भाव से अनेकानेक प्रयोग किये, अनेकानेक अनुसंधान कार्य किए। तात्कालिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों के व्यक्तिगत स्वाध्याय का अभाव था। गिजूभाई ने अपने प्रयोगों से सीखने की नवीन संकल्पना को स्थापित किया। उनके इन प्रयासों को नवीनतम रूप से सीखने की दृढ़ता पर बल देना

शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य है। नई शिक्षा नीति भी प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचारों की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार की गयी है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रेरित करना है जिससे वह तर्कसंगत विचार, करूणा और रचनात्मक, कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्यों का सृजन कर सकें। नई शिक्षा नीति 2020 में जो आधारभूत सिद्धांतों को शामिल किया गया है वह गिजूभाई के शिक्षादर्शन व शैक्षिक चिंतन में भी दृष्टिगोचर होते हैं। उनके द्वारा रचित नवाचार प्रयोग का संकलन दिवास्वप्न में वर्णित है। गिजूभाई की पुस्तक दिवास्वप्न एक शैक्षिक पुस्तक या दस्तावेज नहीं बल्कि एक सर्जनात्मक साहित्य का उपन्यास है। जो बालक की शिक्षा प्रक्रिया से लुप्त हुई सृजनात्मक और तत्प्रसूत आनंद का पुनराविष्कार और पुनर्प्रतिष्ठित करती है। दिवास्वप्न में विभिन्न विषयों की मुख्य अवधारणाओं को सरल व सहज रूप में बहुत ही सुंदर रूप में वर्णित किया गया है, जो इस प्रकार हैं—

- भाषा की अनेक अवधारण, जैसे— संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि रटने की अपेक्षा खेल-खेल में सीखना, व्याकरणीय खेलों के कार्डस् के द्वारा वर्णमाला के वर्णों द्वारा चिट्ठी, निबंध, नाटक, वार्तालाप, कविता-शिक्षण की नींव, लोकगीत के गायन इत्यादि। नवाचार प्रयोगों से भाषा ज्ञान को प्राथमिक स्तर के बालकों की स्मृति में स्थायी रूप से संजोने का उत्कर्ष कार्य गिजूभाई द्वारा किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास; समृद्ध गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सीखने के इन्हीं कौशलों को रेखांकित करती है।
- गणित विषय की विभिन्न अवधारणाएँ, जैसे— संख्या ज्ञान, अंकों की पहचान एवं मॉण्टेसरी की वृक्ष-पद्धति जिसमें गणना, आकार व आकृति की पहचान व समझ, ज्यामितीय आकार और उनकी पहचान— घरेलू उपकरणों में शाला के साधनों, खिलौनो और अनेक उपलब्ध स्थितियों में, जैसे— कमरा, खिड़की, दरवाजा आदि में कोण, समकोण, त्रिभुज, चतुर्भुज, आयात, वर्ग एवं वृत्त आदि की समझ उनके तात्कालीन शिक्षण पद्धति में नवाचार प्रयोग था।
- इतिहास विषय पढ़ने की बुनियाद कहानी से, एतिहासिक घटनाओं को जोड़कर कहानी बनाकर शिक्षण गिजूभाई की एक अनूठी पहल थी।
- नक्शे से खेलता-भूगोल से भौगोलिक संरचनाएँ, नक्शे में स्थित विभिन्न शहरों, नगरों, महानगरों की स्थिति की समझ सरलतम रूप से समझाना, गिजूभाई का उत्तम प्रयास था।
- प्रकृति के सान्निध्य में चित्रकला का अभ्यास उनका अनुपम प्रयास था। पेड़ पर दृष्टि डालकर तने की, डालियों की पत्तियों की संरचना बनाना, सूर्योदय के समय रंगों की खूबियाँ देखना, स्वानुभव प्राप्त कर ध्यानपूर्वक चित्र बनाना गिजूभाई की शिक्षण पद्धति का रोचकता लिए हुए नवीन प्रयास था।
- विज्ञान की महत्वपूर्ण संकल्पनाओं, जैसे— नक्षत्र ज्ञान, आकाशीय घटनाओं को, पृथ्वी की संरचना, मनुष्य, जीव-जंतुओं एवं पादप जगत आदि को सजीवता रूप से जानने का

अनुपम उदाहरण उनकी पुस्तक दिवास्वप्न में वर्णित है।

- गिजूभाई ने नैतिक व धार्मिक शिक्षा को धर्मोपदेश के स्थान पर धर्म को जीने का प्रयत्न करने पर बल दिया।

गिजूभाई के नवाचार प्रयोग से विद्यालय का वातावरण स्वतः ही अनुशासित होता चला गया जिसके परिणामस्वरूप उनकी प्राथमिक शाला के विद्यार्थीगण में निडरता, परस्पर मित्रता, सामूहिक भागीदारी, उत्साह, जिज्ञासा, शिखण स्व-अधिगम आधारित नवीन खेल-खोजने की प्रवृत्ति का विकास होने लगा। साथ ही उनमें कल्पनाशक्ति, सृजनशीलता, आत्मविश्वास और अंत: क्रियाओं की क्षमता का प्रादुर्भाव हुआ।

गिजूभाई के नवाचारी प्रयोगों के परिणामों के सार को वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी रेखांकित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में सीखने के लिए स्वतंत्रता, लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय खेल आधारित, गतिविधि आधारित एवं खोज आधारित शिक्षण पद्धति पर बल देती है। शिष्टाचार नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता समूह में कार्य करना व आपसी सहयोग को विद्यार्थियों में विकसित करने पर बल देती है।

गिजूभाई का शैक्षिक चिंतन प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों के दायित्वों में उनकी जवाबदेही को भी सकारात्मकता प्रदान करता है। उन्हें कल्पनाशील, बालमित्र, सृजनशील, क्रियाशील, नवाचारी व प्रयोगशील बनाने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षण व्यवस्था में नवीन प्रयोग के प्रति प्रतिबद्ध करता है। शिक्षकों के सम्मान में वृद्धि, शाला के वातावरण में सुधार व शाला और समाज के मध्य समन्वय स्थापित करने पर बल देता है। उनके इन प्रयासों को शिक्षा नीति 2020 उत्कृष्ट पाठ्यक्रम एवं शैक्षणिक ढाँचा को सुदृढ़ बनाने पर बल देती है। प्रारंभिक बाल्यावस्था के पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नवाचार एवं सर्वोत्तम प्रथाओं पर व नवीनतम शोध को शामिल करने पर बल देती है। गुणवत्तापूर्ण संसाधनों को उपलब्ध करवाना व शिक्षकों को उच्चतम दर्जा, आदर व सम्मान के भाव को महत्व देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जिन शैक्षिक स्थितियों को उचित दिशा देने के लिए निर्देशित कर रही है उन समस्त शैक्षिक आधारों के दर्शन गिजूभाई के शैक्षिक विचारधारा में समग्रता से परिलक्षित होते हैं। बाल शिक्षण व प्राथमिक शिक्षा में उनका अभूतपूर्व योगदान उन्हें विश्वभर के अनेक शिक्षाविदों से सर्वोपरि रखता है। उनके नवाचारी प्रयोगों ने शिक्षा को क्रीड़ा से जोड़ा, आनंद से जोड़ा व प्रेम से जोड़ा। उनके अनुसार शिक्षक की कर्मठता, कल्पनाशीलता व जवाबदेही यदि शिक्षा व शिक्षण के प्रति समर्पित है, तो शिक्षा एक सार्थक मानव व मानवता का निर्माण करेगी। गिजूभाई का संपूर्ण शैक्षिक साहित्य, नवाचार प्रयोग का समन्वित रूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिलक्षित होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों को सुविधादाता होने के साथ-साथ शोध उन्मुखी होने पर बल देती है। बहुविषयात्मक शिक्षा की परिकल्पना में राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक शिक्षक को अपने

विषयवस्तु के साथ-साथ शिक्षाशास्त्र में भी पारंगत होने की अनुशंसा करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों में जिन शिक्षण कौशलों के विकास को रेखांकित करती है, वही शिक्षण कौशल गिजूभाई अपनी शिक्षण पद्धति में प्रत्येक शिक्षक के व्यक्तित्व और उसके व्यावसायिक दक्षता में परिपूर्णता के लिए समझाते रहे हैं। गिजूभाई की शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों में सीखने की दर, उनकी बौद्धिक क्षमताओं के अनुरूप उल्लेखित है जिनका अनुकरण करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कहती है।

निष्कर्ष

गिजूभाई एक प्रयोगवादी, रचनाधर्मी शिक्षक थे। गिजूभाई की मौलिक एवं नवाचारी शिक्षण पद्धति ने उन्हें युगों-युगों तक एक सर्वकालिक प्रासंगिक शिक्षाविद का स्थान प्रदान किया।

गिजूभाई का शिक्षा दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभावशाली हस्तांतरण पर केंद्रित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तर्कसंगत भारतीय दर्शन पर आधारित शिक्षण अधिगम की संकल्पना के विचारों के संपोषण पर बल देती है। भारतीय तत्व ज्ञान के गूढ़ निहितार्थ वर्तमान पठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों के माध्यम से नवांकुरों की समझ में बैठे, यह शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के इस मुख्य उद्देश्य को गिजूभाई की शिक्षण पद्धतियों के व्यावहारिक उपयोग से प्राप्त किया जा सकता है, यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी।

गिजूभाई द्वारा रचित प्राथमिक शिक्षा की संकल्पना के अनुरूप शिक्षा के सभी विषयों को मौलिक एवं सहज पद्धतियों से जीवन से संबंधित कर पढ़ाने से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास तथा सभी जीवन कौशलों का विकास निश्चित ही संभव है। गिजूभाई ने प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं मानसिक क्षमता के संरक्षण एवं विस्तार के लिए भारतीय (देशी) शिक्षण पद्धति को प्रमुखता से ठीक उसी तरह माना जिस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा ई.सी.सी.ई. के लिए प्रमुखता से बल देती है।

इस प्रकार गिजूभाई के शैक्षिक नवाचार प्रयोग एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दोनों बाल्यावस्था की शिक्षा को पारंपरिक पद्धतियों से हस्तांतरित करने को रेखांकित करती है।

अतः कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गिजूभाई के मौलिक नवाचारों निःसंदेह प्रासंगिक है।

संदर्भ

कुमार, एस. और एन.आर. सक्सेना, 2007. *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

गुप्ता, एस. 2011. *एजुकेशन इन इमर्जिंग इंडिया*. क्षिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली.

दवे, आर. 2011. *गिजूभाई. बधेका— भारतीय शिक्षा के प्रयोग पुरुष*, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल.

बधेका, जी. 2008. *दिवास्वप्न*. सर्जना, बीकानेर.

मदान, पी. 2013. *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक*. आगरा पब्लिकेशन. आगरा.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. 1 दिसंबर, 2022 को https://www.mhrd.gov.in/sites/upload-files/mhrd/files/mep/NEP-Final-Hindi.pdf से प्राप्त।

सरित, एस. और ए. भार्गव. 2007. *आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों का चिंतन*. एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा.